शांतिवन। डिवाइन आर्ट फाउण्डेशन सोनीपत के फाउंडर जगतगुरू संतोषी महाराज जी को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी।

लखनऊ-उ.प्र.। डेप्युटी चीफ मिनिस्टर केशव प्रसाद मौर्य को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राधा।

कुंडली-सोनीपत (हरियाणा)। टी.डी.आई. क्लब के जनरल मैनेजर दिगम्बर सिंह को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् चित्र में उनके साथ ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. पूजा तथा अन्य।

नागौर-राज.। जिला कारागृह में कैदी भाई बहनों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अनिता। साथ हैं डॉ. मंजू, ब्र.कु. सम्पत्त, ब्र.कु. सावित्री, ब्र.कु. मधी, कारागृह उप अधीक्षक श्रवणराय चौधरी, इंचार्ज भवानीसिंह तथा अन्य।

सारनाथ-उ.प्र.। सेवाकेन्द्र पर आयोजित रक्षाबंधन कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुरेन्द्र दीदी, राजयोगी ब्र.कु. दीपेन्द्र, ब्र.कु. विपिन, कसाबा ग्रुप सामाजिक संस्था के सदस्य तथा ब्र.कु. बहनें।

मोहाली-पंजाब। रक्षाबन्धन का महत्व समझाने के पश्चात् कमाण्डो कॉम्प्लेक्स में कमाण्डोज़ को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.सुमन तथा अन्य।

परमात्मा ने बताई संस्कार की यथार्थ परिभषा

गतांक से आगे...

तेरहवें और चौदहवें अध्याय में प्रकृति से उत्पन्न गुणों के आधार पर, मनुष्य कैसे सतो, रजो, तमो में आ जाते हैं और अपने आपको भी हम कैसे समझें कि हम किस श्रेणी में हैं, ये बताया गया है।

तेरहवें अध्याय में हम देखेंगे कि किस प्रकार ये खेल प्रकृति, पुरुष और परम पुरुष के बीच में चलता है और उससे सम्बंधित कुछ गुह्य बातें अर्जुन भगवान से पूछते हैं। जो हम सभी के प्रश्न हो सकते हैं और उन प्रश्नों का समाधान भगवान कैसे करते हैं, विशेष कर क्षेत्रज्ञ भाग योग। तेरहवें अध्याय में स्पष्ट किया है कि शरीर क्षेत्र है जिसमें धर्मक्षेत्र और कुरुक्षेत्र है। पहले अध्याय का पहला श्लोक याद आता है कि जब धृतराष्ट्र ने संजय से पूछा कि धर्मक्षेत्र और कुरुक्षेत्र पर क्या हो रहा है? तुम मुझे बताओ। धर्मक्षेत्र और कुरुक्षेत्र का भाव इस अध्याय में भगवान ने स्पष्ट किया है कि जिसमें धर्मक्षेत्र और कुरुक्षेत्र दोनों ही हैं। शरीर को ही क्षेत्र कहा, जहाँ धर्मक्षेत्र और कुरुक्षेत्र दोनों ही हैं। कैसे? जब शरीर रूपी क्षेत्र में दैवी संस्कारों का प्रभाव विशेष होता है तब वह धर्मक्षेत्र बन जाता है। जब आसुरी संस्कारों का प्रभाव कर्मेन्द्रियों पर पड़ता है, तब यही संघर्ष का एक क्षेत्र, कुरुक्षेत्र बन जाता है।

पहले श्लोक से लेकर बारहवें श्लोक तक धर्मक्षेत्र, कुरुक्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का यथार्थ ज्ञान देते हैं।

तेरहवें श्लोक से लेकर उन्नीसवें श्लोक तक ये परमपुरुष परमात्मा का यथार्थ ज्ञान प्रदान दिया और बीसवें श्लोक से लेकर पैंतीसवें श्लोक तक पुरुष और प्रकृति का संयोग बताया कि किस प्रकार इस खेल में दोनों की ही आवश्यकता है। अर्जुन का पहला सवाल यह है कि प्रकृति, पुरुष क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ क्या है? मैं ये सब जानना चाहता हूँ। जब दिव्य दृष्टि के आधार से परमात्मा का स्वरूप स्पष्ट हो गया तो उसके जानने की जिज्ञासा और तीव्र हो गयी, जो गुह्य से गुह्य रहस्य वाली बातें हैं, वह वो जानना चाहता है।

-ब्र.कु.ऊषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

तब परमात्मा ने बताया कि शरीर ही क्षेत्र है, उसे जानने वाला क्षेत्रज्ञ है। परमात्मा ही सभी क्षेत्रों का ज्ञाता है, यही वास्तव में यथार्थ ज्ञान है और वे यथार्थ ज्ञान को और विस्तार से बताते हैं। पंच महाभूत, अहंकार युक्त मन और बुद्धि, दसों इन्द्रियां, पाँच इंद्रियां विशेष - शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध और इच्छा, द्वेष, सुख, दु:ख, संघात तथा जीवन के लक्षण इन सबको कर्म का क्षेत्र कहा जाता है। अर्थात् ये कुरुक्षेत्र हैं। जिसमें बोया हुआ भला व बुरा बीज संस्कार रूप में नित्य उगता रहता है। मनुष्य जैसे कर्म करता है, उस कर्म के अनुसार ही उसका संस्कार बनता है। जैसे कहा गया कि कर्म आत्मा के ऊपर अपना प्रभाव छोड़ देता है। जिस प्रभाव को ही दूसरे शब्द में कहा जाता है - संस्कार। अब संस्कार कितने प्रकार के होते हैं मनुष्य के अंदर। तो यह देखा जाता है कि हर इंसान के अंदर पांच प्रकार के संस्कार होते हैं।

सबसे प्रथम प्रकार के संस्कार हैं - ओरिजनल संस्कार। ओरिजनल संस्कार अर्थात् सतोगुण के संस्कार। जब आत्मा अव्यक्त से व्यक्त रूप में इस संसार के क्षेत्र पर आती है, तो उस समय उसके सतोगुणी संस्कार होते हैं, जो आत्मा के सात गुण हैं। ये सातों गुणों से भरपूर अर्थात् दूसरे शब्द में कहें कि उनकी बैट्री पूर्ण रूप से चार्ज होती है। ये उसके ओरिजनल संस्कार हैं। लेकिन इस संसार में आने के बाद धीरे-धीरे वो अपनी वास्तविकता से दूर हटने लगती है और इस संसार के अंदर से कई प्रकार विषयों के वशीभूत होने लगती है। जो सात गुणों से भरपूर संस्कार थे, वे धीरे-धीरे लुप्त होकर के इस दुनिया के बुराइयों के आधार पर संस्कार बनते हैं। विशेषकर अज्ञानता और अहंकार से युक्त उसके कर्म होने लगते हैं। उस कारण से उसके अंदर वो संस्कार विशेष रूप से विकसित होने लगते हैं। - क्रमश:

ख्यालों के आईने में...

वक्त से लड़कर जो नसीब बदल दे,
इंसान वही जो अपनी तकदीर बदल दे।
कल क्या होगा कभी मत सोचो,
क्या पता कल वक्त खुद अपनी तस्वीर बदल दे।।

घर के बाहर दिमाग लेकर जायें,
क्योंकि दुनिया एक बाज़ार है।
लेकिन घर के अंदर सिर्फ दिल लेकर जायें, क्योंकि वहाँ एक परिवार है।।

धन को एकत्रित करना सहज है, लेकिन
संस्कारों को एकत्रित करना कठिन है।
धन को तो लूटा जा सकता है,
लेकिन संस्कारों के लिए समर्पित होना पड़ता है।।

देह मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें
आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल"

TATA SKY 1065 | airtel digital TV 678 | FASTWAY | GTPL | DEN
VIDEOCON d2h 497 | RELIANCE Digital TV 640 | hathway UCN | DIGICABLE | SITI

Free to Air
ABS Asia Broadcast Satellite
FREE DTH
KU Band with MPEG (DVB-S/S2) Receiver
LNB Freq. - 09750/10600
Tans Freq. - 12227
Polarization - Horizontal
Symbol - 44000
22k - On
Satellite - ABS-2; 75° E
Contact
Brahma Kumaris, 2nd Flr Anand Bhavan, Shantivan, Sirohi, Abu Rd, Raj-307510
+91 9414151111
+91 8104777111
info@pmtv.in
www.pmtv.in

सूचना : अगस्त 2017 से ओमशान्ति मीडिया पत्रिका की सदस्यता शुल्क में मामूली सी बढ़ोत्तरी की गई है जो कि वार्षिक शुल्क 200 और तीन वर्ष का 600 किया गया है।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें...

कार्यालय- ओमशान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए
सम्पर्क - M - 9414006096, 9414182088,
Email- omshantimedia@bkivv.org,
mediabkm@gmail.com,
Website- www.omshantimedia.info
सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये,
आजीवन 4500 रुपये ।
विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया" के नाम से मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।